

# कैसे मुस्लिम तुर्की ने सिर्फ दो वर्षों में एक सम्पूर्ण प्राचीन ईसाई सभ्यता को नष्ट कर दिया



यह एक भयावह कहानी है कि मुसलमान बहुल देश अल्पसंख्यकों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं ।

२०वीं सदी का पहला नरसंहार यूरोप में नाजियों द्वारा यहूदियों का नरसंहार नहीं था। पहला नरसंहार इस्लामी तुर्क साम्राज्य ने १९१५-१७ से प्राचीन ईसाई राष्ट्र अर्मेनिया के विरुद्ध किया गया था।

आज जो पूर्वी तुर्की है वह पहले अर्मेनियाई ईसाइयों की मातृभूमि हुआ करता था। इस्लाम अथवा तुर्क यहाँ पर बाद में आये। अर्मेनिया एक प्राचीन ईसाई साम्राज्य है और ईसाईयत को राज्य के मज़हब के रूप में स्वीकार करने वाला पहला महान साम्राज्य है।

यह अर्मेनियाई ऑर्थोडॉक्स चर्च का अनुसरण करता है और प्रारंभिक ईसाई चर्चों और समुदायों के सबसे प्राचीन और विशिष्ट समूह में से एक है। उनकी त्रासदी यह थी कि फर्टाइल क्रीसेंट के शीर्ष पर वे पूर्व से पश्चिम को पार करने वाले महान साम्राज्यों के चौराहे पर थे।

येरेवन, अर्मेनियाई राजधानी, विश्व के सबसे पुराने बसे हुए नगरों में से एक है। अर्मेनियाई पहले मूर्तिपूजक हुआ करते थे। और ईसाई धर्म में उनके धर्मांतरण के बाद भी उन्होंने कई पेगन रीतियों को बनाए रखा जैसे कि माउंट अरारत के प्रति उनकी श्रद्धा।

मुस्लिम तुर्कों के अनातोलिया (जो कि अब तुर्की है) में फैलने के बाद अर्मेनिया को अपने लंबे इतिहास में नियमित रूप से मुसलमान देशों हाथों नरसंहार का सामना करना पड़ा। पड़ोसी देशों के इस्लामीकरण के बाद यह पूर्व में शिया इस्लाम और पश्चिम में सुन्नी तुर्की के बीच घिर गया।

१९वीं शताब्दी में पूर्वी अर्मेनिया रूसी कब्जे में आ गया, जिन्होंने उन पर अत्याचार तो किया लेकिन रूस के अधीन अर्मेनियाई ईसाईयत सुरक्षित थी। पश्चिमी अर्मेनिया जो कि सुन्नी तुर्क साम्राज्य के द्वारा शासित था, अत्याचार, नरसंहार, अर्मेनियाई महिलाओं का बलात्कार आदि चलता रहा।

१८९६ में तुर्क सुल्तान हामिद द्वितीय ने अर्मेनियाई ईसाइयों के सामूहिक नरसंहार का आदेश दिया, और ३ लाख अर्मेनियाई मारे गए। यह आने वाले अर्मेनियाई नरसंहार का अग्रदूत था। १९०९ में अदाना नरसंहार हुआ जिसमें ३०,००० अर्मेनियाई ईसाइयों को तुर्की के मुसलमानों ने मार डाला।

१९०८ में तुर्की में राजनीतिक क्रांति हुई जिसमें तुर्की नेताओं की एक नई फसल – यंग तुर्क -देश पर शासन करने के लिए आई। 'आधुनिक' नाम के चलते वे वास्तव में एक 'शुद्ध आधुनिक राष्ट्र' बनाने के लिए अल्पसंख्यकों से 'तुर्की को शुद्ध' करने के लिए उत्सुक थे, भले ही नरसंहार द्वारा।

१९१४ में प्रथम विश्व युद्ध के प्रारम्भ में अर्मेनियाई ईसाइयों के छिटपुट नरसंहार एक व्यवस्थित नरसंहार में बदलने वाले थे। अर्मेनियाई लोगों पर रूसी सेना के साथ गुप्त रूप से षडयंत्र रचने का आरोप लगाया गया था, जो स्पष्ट रूप से एक झूठा आरोप था।

ऐसे समाज में तथ्य का अर्थ नहीं जो गैर-मुसलमानों को दोष देने के लिए तैयार हैं। तुर्की मुस्लिम सेना रूस के विरुद्ध हारी, लेकिन पीछे हटते हुए, उन्होंने अर्मेनियाई ईसाइयों का नरसंहार किया जो तुर्की के नागरिक थे। इसमें सेना को आम तुर्की के मुसलमानों का पूरा समर्थन था।

अर्मेनियाई ईसाइयों का सामूहिक नरसंहार दिसंबर १९१४ तक प्रारम्भ हो गया था। तुर्की मुस्लिम राज्य अर्मेनियाई लोगों को पूर्णतः समाप्त करना चाहता था। अर्मेनियाई लोगों को 'सभी हथियार सौंपने' के लिए कहा गया। 'विरोध' पर उन्हें मार दिया जाना था।

अगर उन्होंने हथियार नहीं सौंपे, तो उन पर 'तुर्की के आदेशों की अवहेलना' करने का आरोप लगाया गया और उन्हें सामूहिक रूप से मार दिया जाएगा। वान, पूर्वी तुर्की का प्राचीन नगर १९१५ के ईसाइयों के नरसंहार का सबसे पहले केन्द्रों में से एक बना।

मई १९१५ में जब रूसी वहां पहुंचे तो उन्हें अर्मेनियाई ईसाइयों की ५५,००० शव मिले, जो नरसंहार से पहले वैन जनसंख्या के आधे से अधिक थी। १५ जून तक अर्मेनियाई ईसाइयों के इस प्राचीन गढ़ में कुल मिलाकर केवल १० ईसाई बचे थे।

जब तुर्क सेनाएं ईसाइयों का नरसंहार करने के लिए अर्मेनियाई गांवों में प्रवेश करती थीं, तो पुरुषों को तुरंत मार दिया जाता था और महिलाओं का बलात्कार और अपहरण कर लिया जाता था। फिर आस-पास के नागरिक और कुर्द मुसलमान ईसाई बच्चों को दासता के लिए ले जाते थे।

नरसंहार का आयोजन करने वाले तुर्की मुस्लिम संगठन को संघ और प्रगति समिति (सीयूपी) कहा जाता था। (क्या क्रूर विडंबना है!) सीयूपी बिलकुल भी नहीं चाहती थी कि आधुनिक तुर्की में अर्मेनियन ईसाइयों को कोई भी स्थान मिले, चाहे इसके लिए उनका नरसंहार ही क्यों न करना पड़े।

ओटोमन मुस्लिम रिकॉर्ड के अनुसार समाधान यह था : अर्मेनियाई ईसाई जनसंख्या को ५% से कम करना था उन स्थानों पर भी जहां पर अर्मेनियाई ५०% से अधिक थे। तुर्की राज्य ने सहमति व्यक्त की कि नरसंहार के बिना यह लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

युद्ध क्षेत्र में अर्मेनियाई ईसाई जहां कहीं भी थे, उनका नरसंहार किया गया। शांति क्षेत्र में रणनीति अलग थी। शांति क्षेत्र अर्मेनियाई लोगों को 'सीरियाई रेगिस्तान की ओर मार्च' करने का आदेश दिया गया था, क्योंकि युद्ध के दौरान उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता था।

उन्हें कहाँ ले जाया जा रहा था ? सीरियाई रेगिस्तान की ओर ! तुर्क मुस्लिम राज्य विश्व में अब तक का सबसे बर्बर राज्य था । सहिष्णुता का कोई दिखावा भी वहाँ नहीं था । अर्मेनियाई लोगों को मरुस्थल में भेजना उनका नरसंहार था और तुर्कों ने गर्व से स्वीकारा ।

अर्मेनियाई ईसाइयों द्वारा खाली किए गए घरों, गांवों और पूरे कस्बों पर अधिकार करने के लिए, तुर्की राज्य रचनात्मक समाधान लेकर आया । उन्होंने पूरे मध्य पूर्व और काकेशस से मुस्लिम जनजातियों को तुर्की में बसने के लिए अर्मेनियाई ईसाई घरों को घेरने के लिए आमंत्रित किया ।

काकेशस की मुस्लिम जनजातियों जैसे चेचेन और सिरकासियन और सीरिया के कुर्दों ने तुर्की के आह्वान का उतार भी दिया । गैर-मुसलमानों के प्रति इस्लामी घृणा ने इन नागरिकों को अकल्पनीय बर्बरता से भर दिया और उन्होंने अर्मेनियाई लोगों के नरसंहार में ओटोमन राज्य की सहर्ष सहायता की ।

तुर्क मुस्लिम अधिकारियों ने मुस्लिम इमामों को अर्मेनियाई ईसाइयों को मारने के लिए प्रवासी मुस्लिम जनजातियों को प्रोत्साहित करने के लिए नियुक्त किया । उन मुसलमानों को वित्तीय पुरस्कार दिए गए जिन्होंने राज्य के आह्वान का उत्तर दिया और अर्मेनियाई ईसाइयों को मारा ।

१९१५ में नरसंहार प्रारम्भ हुआ । इस बार तुर्क मुसलमानों के लिए अर्मेनियाई संपत्तियों को हड़पना चाहते थे । उन्हें अपने घरों से निकाल कर उन्हें रेगिस्तान में ले जाया गया । पुरुषों को महिलाओं और बच्चों से अलग किया गया और उन्हें पहले गोली मारी गई ।

अर्मेनियाई ईसाइयों के निष्पादन स्थलों को राजमार्गों के पास, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाकों में और झीलों, कुओं, कुंडों और नदियों के पास चुना गया था ताकि शवों को छुपाया जा सके और उन्हें आसानी से निपटाया जा सके । अर्मेनियाई ईसाइयों को इस प्रकार डेथ मार्च पर ले जाया गया ।

इन कारवाँ के साथ तुर्क मुस्लिम सिपाही रहते । वे अर्मेनियाई ईसाइयों को बचाने के लिए फिरौती मांगते थे यह जानते हुए कि कोई भी अर्मेनियाई वास्तव में उन्हें भुगतान करने में सक्षम नहीं था । जो भुगतान नहीं कर सके वे मारे गए, जिसका अर्थ अधिकांश अर्मेनियाई थे ।

एज़िंदजान के पास हत्याओं के प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए शिविर स्थापित किए गए थे । नरसंहार किए गए अर्मेनियाई लोगों के शवों को पास के केमाह वादी में फेंक दिया जाएगा । कभी-कभी उन्हें पहाड़ की चट्टानों से धकेल दिया जाता था । झील के पास इस तरह हजारों लोग मारे गए ।

अर्मेनियाई ईसाइयों को बिना भोजन और पानी के मार्च करने के लिए मजबूर किया गया । और जो कोई भी अत्यधिक थकावट के कारण गिरता, उसे तुरंत गोली मार दी जाती, चाहे वह बच्चा हो या महिला । इतना नरसंहार हुआ कि तुर्की के राजमार्ग अर्मेनियाई ईसाइयों के शवों से मीलों तक पटे रहते ।

अर्मेनियाई ईसाइयों को झीलों और नदियों में डुबाना तुर्की मुस्लिम राज्य का रुचिकर ढंग था । तैरने से रोकने के लिए और रस्सी बचाने के लिए दो लोगों को एक साथ बांधा के नदी में डुबाया जाता था ।

लाखों अर्मेनियन लोगों को मार के नदियों में फेंक दिया गया । ये सभी नदियाँ टाइग्रिस और यूफ्रेट्स की

मेगा नदियों में मिलती थीं। इतने सारे अर्मेनियाई शव इन नदियों में बहाए गए कि उन्होंने नदियों को अवरुद्ध कर दिया और उन्हें साफ़ करने के लिए की आवश्यकता पड़ती थी।

अर्मेनियाई ईसाइयों के शव नदियों के किनारों में फंस जाते थी। और फिर भी तुर्की मुसलमानों द्वारा इतने लोगों का नरसंहार किया गया कि कुछ अर्मेनियाई शव पूरे इराक में २००० किलोमीटर से अधिक की यात्रा करके फारस की खाड़ी में पहुँच जाते थे।

और हमेशा की तरह कुछ अर्मेनियाई इस्लाम में धर्मान्तरित हो गए थे। जिन्होंने विरोध किया वे मारे गए। जहाँ वे ५% से अधिक थे, ओटोमन्स ने उनका नरसंहार किया। एरज़ेरम के 99% अर्मेनियाई ईसाई लोगों की हत्या कर दी गई थी।

अर्मेनियाई महिलाओं का भी अपहरण किया गया और उन्हें सेक्स स्लेव के रूप में प्रयोग किया गया। विश्व युद्ध के दौरान, मुस्लिम नगर दमिश्क के बाजारों में बहुत सारी अर्मेनियाई महिलाओं को बेचा गया – नग्न – पशुओं की तरह। कई अरब के बाजारों में बेचे गए और हज यात्रियों द्वारा खरीदे गए।

१९१५-१७ के दो वर्षों के दौरान तुर्की मुसलमानों द्वारा १५ लाख अर्मेनियाई ईसाइयों का नरसंहार किया गया, जो पूरे अर्मेनियाई जनसँख्या का लगभग आधा हिस्सा था। केवल पूर्वी अर्मेनिया जो रूसी नियंत्रण में था, इस तरह के भाग्य से बच गया।

लेकिन मानव जाति के इतिहास में सबसे बर्बर और भयानक नरसंहारों में से एक में लगभग पूरे पश्चिमी अर्मेनिया का नरसंहार किया गया था। और यह 'शुद्ध तुर्की मुस्लिम राष्ट्र राज्य' बनाने के लिए एक 'आवश्यक' कार्य था, आधुनिक तुर्की के लिए।

इस तरह एक मुस्लिम शक्ति अपने गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यकों का पूर्ण नरसंहार करती है। किसी भी मुस्लिम देश में गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यक इस भाग्य का कभी भी सामना कर सकता है। बांग्लादेश में उसके हिंदू अल्पसंख्यकों के सामने जो घटनाएं हो रही हैं, वे इसी दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

साभार-<https://rattibha.com/t> से